शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

साहित्य में अनुसंधान और आलोचना

गोपाल लाल मीणा, शोधार्थी

शोध संक्षेप

मानव अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चिरकाल से प्रकृति से संघर्ष करता आया है। पृथ्वी की अतुल गहराईयों से लेकर आकाश की ऊँचाइयों तक कोई क्षेत्र उससे अछूता नहीं है। चराचर प्रकृति एवं अपनी प्रकृति के अन्तः बाहय नाना रहस्यों के प्रति मानव की जिज्ञासा रही है। अपनी इसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए उसने ज्ञान-विज्ञान के अनेक नये द्वारों-मार्गों का आविष्कार किया। मानव की इसी सहज जिज्ञासा का विकसित रूप अनुसंधान है। प्रस्तुत शोध पत्र में अनुसंधान और आलोचना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान का अर्थ एंव परिभाषा

'अनुसंधान' शब्द का 'अनु' उपसर्ग पूर्वक 'धा' धातु (धारण करना, रखना) से बना है। 'अनु' का अर्थ है पीछे लगना, अनुसरण करना या पुनः करना और 'संधान' का अर्थ है निशाना लगाना, लक्ष्य बान्धना या निष्चित करना। अतः अनुसंधान शब्द का पूर्ण अर्थ हुआ-पूर्ण एकाग्रता एवं धैर्यपूर्ण अनवरत परिश्रम से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना और लक्ष्य प्राप्ति पर्यंत निरंतर बढ़ना। इसका एक अर्थ शोध भी हो सकता है। मगर शोध की अपेक्षा अनुसंधान शब्द अधिक व्यापक, गंभीर एंव पूर्ण है। अनुसंधान के वंशीय अथवा करीबी शब्दों में अन्वेषण, गवेषण, खोज, मीमांसा, अनुशीलन, सर्वेक्षण, और आलोचना आदि आते हैं। किंतु 'अनुसंधान' शब्द को ही सर्वथा उपयुक्त माना गया है। अंग्रेजी में इसके लिए 'Research' शब्द का प्रयोग किया जाता है। किसी महत्वपूर्ण विषय का (अल्पज्ञात, अज्ञात)या अन्यथा विवेचित का कठोर परिश्रम, एंव पूर्ण लगनपूर्वक किया गया निष्कर्षमूलक वैज्ञानिक अध्ययन 'अनुसंधान' है। पीएम् कुक के अनुसार 'शोध' मूलतः कठोर श्रम पर आधारित प्रामाणिक तथ्यान्वेषण और अर्थान्वेषण है।'' डब्ल्यू.एस.मेनरो ने कहा है- ''मूलभूत तथ्यों के आधार पर कठोर श्रम एवं विवेक से उपलब्ध किसी समस्या के समाधान की प्रक्रिया ही शोध है।'' अमेरिकी विश्वकोष में 'रिसर्च' शब्द के विषय में लिखा है- Basic Research is a continuing search for new knowledge, a systematic search to meet the challenge of the unknown.''

अर्थात् नूतन ज्ञान के लिए निरंतर खोज आधारभूत शोध है, व्यवस्थित खाज के द्वारा अज्ञात तथ्य की चुनौती का सामना करना ही अनुसंधान है।

अनुसंधान की मुख्य दशाएं:-

1.अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण (तथ्यानुसंधान)

2.उपलब्ध तथ्यों या सिद्धान्तों का नवीन आख्यान (पुनराख्यान)

3. ज्ञान क्षेत्र का विस्तार या ज्ञान के क्षेत्र में सर्वथा नवीन किसी मत, विचार या गुण की मौलिक स्थापना। अनुसंधान प्रयोजन ज्ञानवृद्धि या ज्ञान के नये क्षेत्रों का उदघाटन ही अनुसंधान का प्रधान प्रयोजन है। अनुसंधान के द्वारा ज्ञान

शब्द–ब्रह्म ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2014

के क्षेत्र में सर्वथा नवीन किसी मत, विचार या गुण की मौलिक स्थापना की जा सकती है। आज तक जीवन के विविध क्षेत्रों में जो प्रगति हुई है और जिन सुख सुविधाओं का हम अनुभव कर रहे है इन सबका आधार अनुसंधान ही है। अनुसंधान अंधविश्वास, भावुकता एवं मिथ्यतत्व के निवारण के साथ-साथ शवसाधना के समान मृत्यु में छिपे रहस्यों का भी उदघाटन करता है। अतः अनुसंधान किसी तथ्य का जनक नहीं है, शोध किसी विषय या वस्तु के रहस्यों, संघटक तथ्यों एवं शक्तियों की रूप रचना का उदघाटन तंत्र विधान है। शोधार्थी को ज्ञात या अल्पज्ञात से उसके अज्ञात की ओर जाना है। वर्तमान से भूत की ओर जाना है। शोधार्थी कुछ ज्ञान कुछ प्राकल्पना और उत्साह के साथ शोध तंत्र का सहारा लेकर किसी परिणाम तक पहुँचने की कोशिश करता है। इस परिणाम के लिए शोध की तीन अवस्थाएं हैं- 1.प्रतिज्ञानुसार सामग्री संकलन

2. वर्गीकरण - विवेचन

3. शोध- प्रक्रिया द्वारा प्राप्त निष्कर्ष

आलोचना का स्वरूप

साहित्य की भांति आलोचना भी चिरकालिक है। फिर भी आलोचना सृजनात्मक साहित्य की अपेक्षा एक नवीन विधा के रूप में ही ग्रहीत है। आलोचक और स्रष्टा में भेद होने पर भी प्रत्येक आलोचक एक स्रष्टा है, प्रत्येक स्रष्टा आलोचक है। सृजनकर्ता में यदि हृदय का प्राबल्य है तो आलोचक में बुद्विपक्ष का साथ ही प्रत्येक आलोचनात्मक कृति एक विशिष्ट भावस्तर पर पहुंचकर स्वयं सृजन हो जाती है। आलोचना-अर्थ एंव परिभाषा ‘आङ.’ उपसर्ग पूर्वक ‘लुच’ दर्शने धातु से आलोचना शब्द बना है। ‘आ’ समन्तात् (चारों तरफ) लोचनम्-अवलोकनम् ‘तस्य स्त्रियां ट्ाप इति आलोचना’ इसका अर्थ हुआ ‘आङ.’ अर्थात् सब ओर से पूर्णतया और (लुच) देखना-परखना-समझना। तो आलोचना का पूर्णार्थ हुआ किसी वस्तु या कृति को पूर्णतया देखना समझना ही आलोचना है। साहित्य के सन्दर्भ में आलोचना का आशय है किसी कृति का सांगोपांग- विश्लेषण -विवेचन। यह कार्य कृति के अर्थ, व्याख्या, निष्कर्ष एवं मूल्यांकन इन चार सोपानों द्वारा पूर्ण होता है। कुछ विचारकों के अनुसार किसी विषय या वस्तु का निर्णय देना ही आलोचना है। कुछ अन्य विचारकों के अनुसार तुलना ही आलोचना है। पाश्चात्य आचार्य राबर्टसन के अनुसार:- Criticism is a process that goes on over all the field of human knowledge,being simply comparison or clash of opinion अर्थात् मानव के ज्ञान क्षेत्र की समस्त दिशाओं में तुलना और मत-वैविध्य की एक प्रक्रिया ही आलोचना है। गोड़किन के अनुसार:- All genuine criticism consists in comparison between two ways of doing something

कैंट के अनुसार:- Criticism is an Endeavour to find the principle or common ground which lies back of every difference of opinion.”

आलोचना का कार्य उस सिद्वांत अथवा सामान्य धरातल की खोज है जो प्रत्येक मतभेद की रीढ़ में निहित है। संस्कृत आचार्य राजशेखर के अनुसार:- “ सा च कवेः श्रममभिप्रायं च भावयति, तथा खलु फलितः कवेः व्यापारतरूः अन्यथा सावकेषी स्थात्ः। अर्थात् आलोचक कवि रचना संबंधी षिल्प को तथा उसमें निहित गूढ़ अभिप्राय को प्रकट करता है। आलोचक के इस यत्न से ही कवि कर्म का तरू फलित होता है। अन्यथा निष्फल ही रह जाएगा।

आलोचना का प्रयोजन

आलोचना का मुख्य प्रयोजन रचना में व्यक्त विषय और उसमें परिगुंफित स्वचिता की अनुभूति के मर्म का उदघाटन करना है। आलोचना साहित्य के रसास्वादन के साथ-साथ दुरूह स्थलों की व्याख्या करके उन्हें स्पष्ट करती है। प्रसिद्ध विचारक आर्नाल्ड़ के ये शब्द अत्यन्त दृढ़ता से आलोचना के लक्ष्य का कार्य समर्थन करते हैं- "Simply to know the best is that is known and thought in the world, and by in their making this known to create a current of true and fresh ideas." अर्थात् आलोचना का लक्ष्य जगत में ज्ञात एवं विचरित उत्तमोत्तम को जानना और विज्ञापित करना तथा इस प्रकार नितांत सद्य एवं सच्चे विचारों का प्रवाह उत्पन्न कर देना है।

आलोचना के सोपान

1.आलोच्य कृति का मूल भाव समझना।
2.कृति की अर्थभंगिमाओं का एवं अन्य परिवेशों का परीक्षण, विश्लेषण करना।
3.कृति की कलात्मकता का उदघाटन ।
4.कृति का मूल्यांकन (सौंदर्य शास्त्र, मानव मूल्य, नैतिकता एवं रस आदि के आधार पर)

अनुसंधान और आलोचना में साम्य

अनुसंधान और आलोचना दोनों एक दूसरे के पूरक है। दोनों का लक्ष्य ज्ञान का विस्तार करना है। ड़ा उदयभानुसिंह ने अनुसंधान और आलोचना में कुछ समानता बताते हुए , दोनों को लक्ष्य , विषय एवं प्रवृत्ति की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न माना है-"अनुसंधान स्वरूपतः विज्ञान प्रधान है, बुद्धि प्रधान है, चिंतन से ओत-प्रोत है। इसकी सम्पूर्ण प्रविधि प्रक्रिया वैज्ञानिक है। आलोचना स्वरूपतः कला प्रधान होती है अपने प्रयोजन के अनुरूप ही आलोचना भावयोग प्रधान होती है। अनुसंधान राजयोग प्रधान होता है।" अनुसंधान और आलोचना लक्ष्यतः और प्रवृत्यः भिन्न होने पर भी एक दूसरे के पूरक है, साहित्यिक अनुसंधान में आलोचना तत्व अर्थात् तथ्य और सत्य अनिवार्य है, तथ्य और अनुसंधान की समन्वित अवस्था साहित्यिक अनुसंधान है।

साम्य इस प्रकार है - आलोचना और अनुसंधान दोनों ही साहित्य की दो शाखाएं हैं। दोनों का लक्ष्य एक है। ज्ञान का विस्तार करना है। दोनों में तथ्य संकलन, विश्लेषण, वर्गीकरण एवं निष्कर्ष प्रधान पद्धतियों का प्रायः उपयोग किया जाता है। दोनों में वस्तुमूलकता, सहजता और संभवता को महत्व दिया जाता है। दोनों में प्रमाणीकरण के लिए अंतर्साक्ष्य एवं बहिर्साक्ष्यों को अपनाया जाता है । बौद्धिक ईमानदारी दोनों में समान रूप से अपेक्षित है। भाषा-शैली का भी दोनों में विशेष महत्व है। देशकाल परिवेश का भी दोनो में महत्व है। दोनों में वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाया जाता है। और दोनों में प्रतिभा, स्वानुभव और सत्संग का समान महत्व है। अनुसंधान और आलोचना में वैषम्य पर्याप्त मात्रा में समानार्थी होने पर भी इनके लक्ष्यों में और मूल दृष्टि में महत्वपूर्ण अंतर है। अनुसंधान प्रकृत्या विज्ञानात्मक, बुद्धि प्रधान एवं तथ्यात्मक है। ड़ा. नगेन्द्र ने आलोचना और अनुसंधान के लक्ष्य एवं प्रवृत्ति को एक मानते हुए भी उनकी पृथक सत्ता और विशेषता को स्वीकार किया है। मानवीय चिंतन और अनुभूति, मानव चेतना की समृद्धि और परितोष ही साहित्यिक अनुसंधान का चरम लक्ष्य है। साहित्यिक आलोचना का भी चरम लक्ष्य इसके अलावा और क्या हो सकता

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

है? दोनों में जो भेद है लक्ष्य का है। अनुसंधान में ज्ञान पक्ष प्रबल है और आलोचना में संस्कार । लक्ष्य की यह एकता ही पद्धतियों के साम्य के लिए उत्तरदायी है।

कुछ विषमताए इस प्रकार हैं- अनुसंधान का लक्ष्य तथ्यानुसंधान और सत्यसंस्थापन है। जबकि आलोचना का लक्ष्य प्राप्त रचना का सम्यक निरीक्षण और विवेचन है। अनुसंधान ज्ञान प्रधान, तथ्य प्रधान है। जबकि आलोचना ज्ञान एवं लक्ष्य के माध्यम से प्रभाव चैतन्य का प्रधान्य है। अनुसंधान में सत्यता की प्रधानता होती है, आलोचना में संस्कार और कला की प्रधानता होती है। अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, आलोचना भाव प्रधान प्रक्रिया है। अनुसंधान में मूलवस्तु के अन्वेषण एवं तात्विक प्रस्तुतीकरण का महत्व है, आलोचना में शब्दार्थ के अनुरूप प्राप्त विषय या वस्तु के अनुभूति पक्ष के निरीक्षण-परीक्षण का महत्व है। अनुसंधान में विषय ही मुख्य है, आलोचना में विषय के साथ आलोचक की प्रतिक्रिया भी प्रकट होती है। अनुसंधान के कई रूप है-जीवनी, पाठानुसंधान, संदर्भ ग्रंथ सूची, परिशिष्ट, ऐतिहासिकता, भाषा वैज्ञानिक अध्ययन आदि। जबकि आलोचना में शब्द-शक्ति, सौंदर्य चेतना एवं ध्वनिमूलक आदि इसके अध्ययन के अन्तर्गत आते है। अनुसंधान में अल्पज्ञात और अज्ञात तथ्य के अन्वेषण के कारण इसका क्षेत्र विस्तृत है, आलोचना में प्राप्त कृति के विवेचन, विश्लेषण के द्वारा इसका क्षेत्र सीमित है। अनुसंधान में प्रत्यक्ष बौद्धिकता का वस्तुपरक ज्ञान का महत्व है, जबकि आलोचना में केवल बौद्धिकता व भावात्मक प्रक्रिया होती है। अनुसंधान में तटस्थता एंव स्थिरता के तथ्य अधिक होते है, आलोचना में व्यक्तिगत प्रभाव, प्रक्षेपण की प्रधानता के कारण तटस्थता एवं स्थिरता कम है। अनुसंधान में सृजनात्मक पक्ष महत्वपूर्ण नही है, जबकि आलोचना में सृजनात्मक पक्ष महत्वपूर्ण होता है। वस्तुतः आलोचना और अनुसंधान के साम्य, वैषम्यमूलक अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि दोनों लक्ष्यतः और प्रवृत्य-पर्याप्त भिन्न होने पर भी अंततः एक दूसरे के पूरक है। यदि मूलतः अनुसंधान कार्य है, तो आलोचना उसमें आनुपातिक योगदान करती है। इसी प्रकार आलोचनात्मक विषय में अनुसंधान क्षेत्र की वस्तु या ज्ञान की छटा का अनुपात रहता है। ज्ञान की सीमाओं के विस्तार और विविध पक्षों को विभिन्न दृष्टियों से समझने के लिए दोनों के ही महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यही नहीं समस्या की जांच-पड़ताल के लिए आवश्यक और अनिवार्यता दोनों की स्वतः सिद्ध हो जाती है।

सन्दर्भ

1 शोध और सिद्धान्त: नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।

2 हिन्दी अनुसंधानः विजयपाल सिंह, राजपाल एण्ड़ सन्स, नई दिल्ली।

3 शोध प्रक्रिया और विवरणिका: सरनाम सिंह, आत्माराम एण्ड़ सन्स, नई दिल्ली।

4 अनुसंधान की प्रक्रिया: सावित्रि सिन्हा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

5 अनुसंधान के स्वरूप, सावित्रि सिन्हा, आत्माराम एण्ड़ सन्स, नई दिल्ली।

6 अनुसंधान के सिद्धान्त, रवीन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

7 अनुसंधान प्रविधिः सिद्धान्त और प्रक्रिया, डा.एस.एन. गणेषन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। 8 हिन्दी आलोचना, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

9 हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी, निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

10 इतिहास और आलोचना, नामवरसिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।